

त्वचा रोग में पंचकर्म



त्वचा रोग से ग्रस्त अनेक रुग्ण वर्षों से चिकित्सा कर करके परेशान हैं। एक डॉक्टर बदल कर दूसरा डॉक्टर, एक औषधि के बाद दूसरी औषधि व आए दिन नए-नए ऑइंटमेंट व क्रीम लगाना उनकी दिनचर्या का हिस्सा बन गया है। ऐसे रुग्णों के लिए आयुर्वेद में त्वचा रोग का कारण दूषित आहार विहार के कारण उत्पन्न रक्त का अशुद्ध होना है। इसके लिए अनेक रक्तशोधक औषधियां वर्णित है परंतु औषधि लेने के पूर्व यदि पंचकर्म द्वारा शरीर शुद्धि की जाए तो औषधि के शत प्रतिशत लाभ मिलते है।

आजकल मनुष्य के खान पान में पहले से काफी अंतर आ गया है। अनियमित जीवन अव्यवस्थित खानपान आम बात हो गई है। आज छोटे-छोटे बच्चों को भी चटपटा खान पान पसंद हैं। घर का नाश्ता, भोजन की पौष्टिकता से परिचित होते हुए भी जीभ के चटोरे पन व स्वाद के वशीभूत होकर वे दिन प्रतिदिन भिन्न-भिन्न व्यंजन लेना पसंद करते है। आज कल के आहार में मिलावटी व कृत्रिम रासायनिक पदार्थों का समावेश हो गया है। पिज्जा, बर्गर, चायनिज, जंक फुड का सेवन आजकल तो आम बात हो गई है। खोमचे वालों को शाम के समय देखिए। एक भी खोमचे वाला खाली नजर नहीं आएगा। इससे ही पता चलता है कि स्वाद लोलूपता इंसान को पसंद हैं। साथ ही असमय उठना, सोना, व्यायाम का अभाव, तेज रफतार जिंदगी व मानसिक तनाव के कारण आज नित नये रोग पनप रहे हैं। त्वचा रोग भी इन्ही अव्यवस्थित जीवन शैली का परिणाम है।

भिन्न-भिन्न त्वचा रोगों के लिए आयुर्वेद में प्रचलित औषधियां है। जिनके सेवन से रुग्ण को निश्चित ही लाभ मिलता है। आयुर्वेद में त्वचा रोग का कारण दूषित आहार विहार के कारण उत्पन्न रक्त का अशुद्ध होना है। इन सब कारणों से दोष दूषित होकर रक्त धातु से मिलकर त्वचा, मांस आदि में विकृति उत्पन्न करते हैं। ऐसे रुग्णों को औषधियां लेने पर तात्कालिक आराम तो मिलता है परंतु पूरी

तरह से रोग नहीं जाता अतः पंचकर्म करने से दोष जड़ से दूर होकर रोग जड़ से मुक्त होते देखे गए हैं। अतः त्वचा रोगों में पंचकर्म अवश्य करना चाहिए। आयुर्वेद में त्वचा रोग के लिए अनेक रक्तशोधक औषधियां वर्णित है परंतु औषधि लेने के पूर्व यदि पंचकर्म द्वारा शरीर शुद्धि की जाए तो औषधि के शत प्रतिशत लाभ मिलते है।

पंचकर्म अर्थात ऐसे 5 कर्म जिससे शरीर का शोधन हो, ये 5 कर्म है— वमन, विरेचन, बस्ति, नस्य, रक्तमोक्षण।

वमन कर्म

शरीर के उर्ध्व भाग से दोषों का बाहर निकलना वमन कर्म के अंतर्गत आता है। वमन कर्म में उल्टी कराकर दोष को बाहर निकालते है। वमन कर्म के लिए मुख्यतः मदनफल चूर्ण, शहद, यष्टीमधु फाण्ट का प्रयोग करते है। वमन के पूर्व स्नेहन स्वेदन अवश्य करते है। चर्मरोगों में शीतपित्त, एक्जिमा, मुहासे, सोरायसिस, हाथीपांव, सफेद दाग, चेहरे या शरीर पर दाह या खुजली में वमन कर्म करने से उत्तम लाभ की प्राप्ति होती है। मुख्यतः कफज चर्म रोगों में वमन के अच्छे परिणाम मिलते है।



विरेचन कर्म

शरीर के अधोमार्ग से दोषों का बाहर निकालना विरेचन कर्म कहलाता है। सामान्य भाषा में इसे जुलाब देना कहते हैं। विरेचन के लिये हरितकी, निशोथ या अमलतास जैसी वनौषधियों का प्रयोग करते हैं। विरेचन के पूर्व भी स्नेहन स्वेदन करना आवश्यक है। एलर्जी, हाथीपांव, सोरायसिस, श्वेत कुष्ठ, मुंहासे, एकिज्मा, शीतपित्त में विरेचन के लाभ मिलते हैं। पित्तदोष प्रधान चर्मरोगों में विरेचन कर्म के श्रेष्ठ परिणाम मिलते हैं।

सभी प्रकार के त्वचा विकारों में रसरक्तमांस की दुष्टि के साथ-साथ कफ पित्त दोष की अधिकता होती है। अतः दोषों का शोधन आवश्यक है। अनुभव से पाया गया है कि वमन की अपेक्षा विरेचन से त्वचा विकार में अधिक लाभ मिलता है। विरेचन के लिए बाहवा मगज प्रधान विरेचन औषधि का त्वचा विकारों में इसका प्रयोग करना चाहिए। कृमि होने पर कपिला चूर्ण, वात का संबंध होने पर कुटकी, सोनामुखी, हरितकी द्रव्यों का प्रयोग करें। पित्त बढ़ने पर बाहवा मगज, गुलाब की कली, त्रिफला चूर्ण, यष्टीमधु जैसी सौम्य औषधियों का प्रयोग करें। सभी प्रकार के त्वचा रोग में महातिक्तघृत का अवश्य प्रयोग करें। अतः सभी त्वचा विकृतियों में विशेष रूप से विरेचन चिकित्सा करनी चाहिए क्योंकि विरेचन से पित्त नष्ट होता है।

बस्ति कर्म

यह एक प्रकार का मेडिकेटेड एनिमा है। शरीर का स्नेहन, स्वेदन कर तत्पश्चात् गुदा मार्ग द्वारा औषधि प्रविष्ट कराते है। इसे ही बस्ति कहते हैं। मलबद्धता के कारण होने वाले चर्मरोग में बस्ति कर्म के बेहतर परिणाम प्राप्त होते हैं। आयुर्वेद मे बस्ति को आधी चिकित्सा कहा है।

कई बार त्वचा विकार में कुछ समय तक रोगी को अच्छा लगता है व फिर त्वचा विकार होता है क्योंकि त्वचा में होने वाले रोग जिद्दी होते हैं। ऐसे विकारों में गोमूत्र व नीम के पत्तों का रस, त्रिफला, दशमूल का काढ़ा की बस्ति देने पर रोग का आक्रमण बार-बार नहीं होता एवं पूरे शरीर में होने वाले अनेक काले दाग, एकिज्मा, गजकर्ण, खुजली में पक्वाशय गत निरुह बस्ति देने से लाभ होता है।

सफेद दाग के रुग्णों में कई बार कृमि विघात की चिकित्सा करनी पड़ती है। ऐसे समय करंज तेल की बस्ति देने से सफेद दाग के रुग्णों को लाभ मिलता है व कृमि की औषधि कम देनी पड़ती है।

नस्य कर्म

नासा मार्ग (नाक) में तेल की 2-2 बूंद शास्त्रोक्त विधि से प्रविष्ट करना नस्य कर्म कहलाता है। औषधि डालने के पूर्व

चेहरे का स्नेहन स्वेदन (मालिश सिकाई) आवश्यक है। नस्य का प्रभावी परिणाम ऊर्ध्व जत्रुगत विकारों में विशेष रूप से मिलता है। नस्य के लिए अणु तैल, षडबिंदु तेल का प्रयोग किया जाता है। बालों का झड़ना व असमय बाल सफेद होने से रोकने के लिए प्रतिदिन अणु तेल या घृत का नित्य सेवन करना चाहिए।

रक्तमोक्षण

त्वचा रोग का मुख्य कारण दूषित रक्त होता है। इस दूषित रक्त को विशेष पद्धति से निकालना ही रक्तमोक्षण है। दूषित रक्त निकल जाने पर त्वचा रोग से मुक्ति मिलती है। जीकुमार आरोग्यधाम में जलौका (Leech) के द्वारा दूषित रक्त का निर्हरण करते हैं। त्वचा रोग में इसके अत्यंत प्रभावी परिणाम मिलते हैं। रक्तमोक्षण के द्वारा सोरायसिस, विसर्प (Erysepals), पीड़िका (Boils), सफेद दाग, एकिज्मा, विद्रधि (Abscess) व अर्बुद (Tumour) में बेहतर परिणाम होता है।

तक्रधारा

इस उपक्रम में आंवला का भिन्न-भिन्न रोग अनुसार औषधि द्रव्य का चयन किया जाता है।

क्वाथ व खट्टे ताक की धारा एक विशेष यंत्र से प्रभावित अंग पर गिराते हैं। सोरायसिस व सफेद दाग जैसे त्वचागत विकारों पर तक्रधारा के चमत्कारिक परिणाम मिलते हैं। इस विधि से धारा 8 दिन से 1 माह तक चिकित्सक परामर्शानुसार दी जाती है। तक्रधारा से बालों के सफेद होना व झड़ना दूर होते हैं।

यदि त्वचा गत रोग वात प्रधान हो तो तिक्तरस युक्त खदिरादिघृत का स्नेहनान कराएं। कफ प्रधान हो तो वमन कराएं। पित्त प्रधान हो तो त्रिवृत्तादि से विरेचन करें। रक्तमोक्षण भी कर सकते हैं। वात प्रकोप देखकर मदनफल- कुटज क्वाथ से निरुह बस्ति दें। करंज तेल, मदनफल सिद्ध तेल से अनुवासन बस्ति दें। सोरायसिस में प्रस्तर व नाडी स्वेद करें। कृमि व कफ प्रधान त्वचा रोग में विडंग चूर्ण व तेल का नस्य दें। साथ ही अभ्यंग, वमन, विरेचन, रक्तमोक्षण करें।

इस प्रकार उपरोक्त पंचकर्म की क्रियाओं की त्वचा रोग में अहम भूमिका है। जिस प्रकार मैले वस्त्र को रंगने के पूर्व उसे साफ धोया जाता है। उसी प्रकार औषधि देने के पूर्व पंचकर्म द्वारा शरीर शुद्ध करने से औषधि शीघ्र लाभ देती है।

डॉ. अंजू ममतानी, जीकुमार आरोग्यधाम, नागपुर